साप्ताहिक

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 07-13 अक्टूबर 2024 वर्ष-10, अंक-25

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

स्वच्छ भारत दिवस-2024: पीएम नरेंद्र मोदी ने मध्यप्रदेश को दी सौगात

ग्वालियर में देश की पहली आत्मनिर्भर गौशाला, हर दिन बनेगी 3 टन सीएनजी

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत दिवस-2024 समारोह में नई दिल्ली से मध्यप्रदेश को अनेक विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने ग्वालियर में बनी देश की पहली आधुनिक और आत्मनिर्भर गौशाला और परिसर में निर्मित कम्प्रेस्ड बायो गैस संयंत्र का वर्चुअली शुभारंभ भी किया। स्वच्छता दिवस पर कुशाभाऊ इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर भोपाल में आयोजित स्वच्छता पखवाड़े के राज्य स्तरीय समापन समारोह में स्वच्छ भारत मिशन और अमृत योजना में 685 करोड़ की लागत की परियोजनाओं का भूमि-पूजन और लोकार्पण हुआ। साथ ही नगर निगम भोपाल के उपकरणों तथा विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री द्वारा लोक-कल्याणकारी परियोजनाओं के भूमि-पूजन और लोकार्पण के लिए आभार माना। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर आदर्श गौशाला ग्वालियर के 100 टन क्षमता बॉयो सीएनजी प्लांट का वर्चुअल शुभारंभ भी किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वच्छता ही सेवा-2024 अभियान अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले नागरिक व संस्थाओं को सम्मानित किया। स्वच्छता सर्वेक्षण-2022 में नगर निगम उज्जैन को थ्री-स्टार रेटिंग मिलने पर उज्जैन के 2 हजार 115 सफाई मित्रों को प्रोत्साहन स्वरूप 3-3 हजार की राशि प्रदान करने के लिए 63 लाख 45 हजार की राशि सिंगल क्लिक से नगर निगम उज्जैन को अंतरित की। मुख्यमंत्री ने उज्जैन के स्वच्छता मित्रों से वर्चुअली आत्मीय संवाद किया। साथ ही कार्य के प्रति उनके समर्पण की सराहना की। मुख्यमंत्री ने नगर निगम शासकीय सेवा में कर्तव्य पालन के दौरान दिवंगत 26 कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकंपा नियुक्ति के प्रमाण पत्र प्रदान किए। मुख्यमंत्री ने भोपाल नगर निगम के 125 नए डोर-टू-डोर सीएनजी वाहनों, 6 नए हुक लोडर, दो श्रेडर मशीन तथा एक लिटर पिकिंग मशीन का अवलोकन किया तथा मंच से झंडी दिखाकर उनका लोकार्पण किया।

नमो-उपवन मिलेगी संजीवनी, चुनौती भरा स्वच्छता का कार्य

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के इतिहास से जुड़ी महान विभूतियों के नाम पर भोपाल के मार्गों पर द्वार स्थापित किए जाएंगे। भारतीय संस्कृति से जुड़े महापुरुषों भगवान राम, राजा भोज, राजा वि मादित्य, सम्राट अशोक आदि के नाम पर इन द्वारों का नामकरण किया जाएगा। भोपाल नगर निगम द्वारा विकसित किए जा रहे नमो-उपवन को राज्य शासन की ओर से हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा 10 वर्ष पूर्व 15 अगस्त पर लाल किले की प्राचीर से स्वच्छता का विषय उठाना अभिनंदनीय है। भारतीय संस्कृति उत्तम सुख-निरोगी काया के सिद्धांत में विश्वास करती है और स्वच्छता ही अच्छे स्वास्थ्य का आधार है। हमें स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छता कर्मी प्राण-प्रण से समर्पित हैं। उनका कार्य चुनौती भरा और जीवटता वाला है, जैसे सेना का सिपाही देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों को कुर्बान कर देता है उसी प्रकार सफाई कर्मी, स्वच्छता और समाज को स्वस्थ बनाए रखने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हैं।

बापू को सच्ची श्रद्धांजलि

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने गांव-गांव में शौचालय निर्मित करवाकर महिलाओं को बड़ी समस्या और पीड़ा से राहत पहुंचाई है। राज्य सरकार स्वच्छता कर्मियों और उनके परिवारों की बेहतरी के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। यह कार्य सच्चे अर्थों में महात्मा गांधी के विचारों को क्रियान्वित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का माध्यम है। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से प्रदेश में 413 नगरीय निकायों में 42 हजार 500 से अधिक स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया।

नगर निगम की दूर होगी कंगाली | ग्वालियर की लाल टिपारा गौशाला आदर्श गौशाला में ग्वालियर नगर निगम और संत समुदाय के सहयोग से 10 हजार गायों की देखभाल की जा रही है। प्लांट के विधिवत संचालन के दिन से ही लगभग 2 से 3 टन प्रतिदिन बायो सीएनजी और 20 टन प्रतिदिन उच्च कोटि की प्राकृतिक खाद का उत्पादन होगा। इससे नगर निगम, ग्वालियर को भी 7 करोड़ की आय होगी। समाज और सरकार के आपसी सहयोग का यह विश्व स्तरीय आदर्श उदाहरण है। सीएनजी प्लांट से पर्यावरण सुधरेगा। स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। ग्वालियर के आस-पास जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा। किसानों को इस प्लांट से गोबर की खाद उचित दाम पर मिल सकेगी।

-कार्यों की समीक्षा बैठक में मंत्री प्रह्लाद पटेल ने दिए निर्देश

मप्र की सभी पंचायतों में बनेंगे भवन, खेत सड़क के लिए प्लान बनाए जाएं

भोपाल। जागत गांव हमार

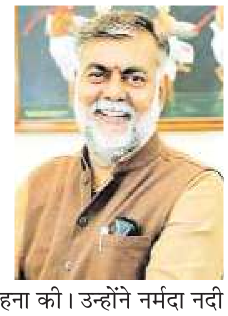

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने प्रदेश की पंचायत एवं सामुदायिक भवन विहीन पंचायतों में पंचायत और सामुदायिक भवन बनाने कार्य में प्रगति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने 25-30 वर्ष पुराने जर्जर पंचायत भवनों का सर्वे कर, उनकी उपयोगिता की जांच कर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश भी दिए। मंत्री मंत्रालय में विभागीय कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने विभागीय कार्यों की प्रगति की जानकारी ली। मंत्री ने स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्धियों को सराहना की। उन्होंने नर्मदा नदी किनारे के 776 तथा पर्यटन महत्व के 117 ग्रामों को ओडीएफ प्लस मॉडल घोषित करने के कार्य की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि शेष ग्रामों को ओडीएफ प्लस बनाने का कार्य भी शीघ्र पूर्ण किया जाए। मंत्री ने कहा कि गांवों में पौधरोपण के लिए ऐसे स्थलों को चिन्हित करें जो जल स्रोतों के किनारे स्थित है। पौधरोपण के बाद उनका संरक्षण और समय- समय पर मूल्यांकन की कार्ययोजना बनाई जाए। खेत सड़क योजना के लिए सभी पंचायतों से प्लान प्राप्त किया जाए।

अच्छे काम पर दें प्रोत्साहन

मंत्री ने निर्देशित किया कि वनाधिकार पट्टे प्राप्त अनुसूचित जनजाति वर्ग के लोगों को मनरेगा के तहत अतिरिक्त 50 दिवसों की मजदूरी मिलने के कार्य में जिलों में प्रगति लाई जाए, इसके निर्देश जारी करें। मनरेगा में अच्छा कार्य करने वाले विकासखंडों को प्रोत्साहन दिया जाए। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव मलय श्रीवास्तव, संचालक पंचायत राज संचालनालय मनोज पुष्प, अपर सचिव एवं मिशन डायरेक्टर एसबीएम दिनेश जैन एवं आयुक्त मनरेगा अवि प्रसाद सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय तिलहन संघ से खाद्य तेल में बनेंगे आत्मनिर्भर

शिवराज सिंह बोले-प्रमाणित बीज किसानों को मुफ्त में देगी सरकार

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में प्रेसवार्ता में कहा कि केंद्र सरकार ने दो बड़े फैसले लिए हैं। भारत की कुल खाद्य तेल की आवश्यकता 2022-23 में 29.2 मिलियन टन थी, लेकिन हमारे यहां ऑइल सीड से खाद्य तेल का उत्पादन 12.7 बिलियन ही हो पाता है। बाकी की मांग पूरा करने के लिए हमको विदेशों पर या आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। इसको लेकर फैसला लिया गया है कि आयात पर निर्भरता खत्म करके हम खाद्य तेलों में कैसे आत्मनिर्भर बने। इसलिए राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन तिहलन बनाया गया है। शिवराज ने कहा कि 10 हजार 103 करोड़ 38 लाख रुपए की लागत से हमारे यहां अभी जो ऑइल सीड्स हैं उनका उत्पादन काफी कम है और इसलिए सरकार उन्नत बीज किसानों को देगी। आईसीएमआर यह बीज बनाएगा। पहले ब्रीडर सीड्स बनाएंगे। उसे फाउंडेशन सीड फिर सरटीफाइड सीड बनाकर किसानों को फ्री में उपलब्ध कराए जाएंगे। पूरे देश में इसके लिए 600 कलस्टर बनाए जाएंगे। 347 जिले के 21 राज्यों में जहां भी ऑइल सीड्स का उत्पादन होता है, उन राज्यों को विशेष रूप से लिया गया है, किसानों को इन कलस्टर में फ्री में बीज, उनको ट्रैनिंग, नई टेक्नोलॉजी कैसे खेती करे जिससे ज्यादा उत्पादन हो और वो जो उत्पादित करेंगे उसकी 100 फीसदी खरीदी की जाएगी।

किसान सम्मान निधि की राशि ट्रांसफर

प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्र से किसानों के खाते में किसान सम्मान निधि की राशि ट्रांसफर की है। उन्होंने बताया कि किसान सम्मान निधि के तहत 20 हजार करोड़ रुपए की राशि खातों में डाले गए हैं। शिवराज ने कहा कि किसान सम्मान निधि के अंतर्गत प्राप्त राशि से मध्यप्रदेश के 81 लाख किसानों को लाभ मिला है। कृषि मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार ने दो नई योजनाएं पीएम-राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और कृषि उन्नत योजना शुरू की है। उन्होंने बताया कि योजनाओं में एक लाख हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे।

बीच भंडारण इकाइयां भी बनाई जाएगी

हर साल 10 लाख हेक्टर पूरे देश में खेती की जाएगी। 7 साल में 70 लाख हेक्टर एरिया इस योजना के अंतर्गत दिया जाएगा। उन्नत बीजों की कमी पूरा करने के लिए 65 नए बीज केंद्र बनाए जाएंगे। 100 हमारे बीज केंद्र बनेंगे। बीजों को सुरक्षित रखने के लिए 50 बीज भंडारण इकाइयां भी बनाई जाएंगी और राज्यों पर हम ज्यादा ध्यान दे रहे हैं जहां केवल एक फसल लेते हैं, खरीफ की, इंटरक्रॉपिंग का भी उपयोग करेंगे। अलग-अलग फसलों के बीच में ये बीज, फसलें लगाई जा सकती हैं और पूरी खरीद किसानों से करेंगे, एक ये बड़ा फैसला कल हुआ है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार प्याज, दाल और चावल का बफर स्टॉक बना रही है। इनके दाम बढ़ने पर सरकार सस्ते में में उपलब्ध कराएगी। शिवराज ने बताया कि केंद्र ने डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन की शुरुआत की है। इसके तहत रिमोर्ट डजिटल से फसल के नुकसान का आकलन किया जाएगा। इस तकनीक से आकड़ों में हेरफेर नहीं हो सकेगी।

सिंग्रामपुर में कैबिनेट का फैसला | मध्यप्रदेश जैन कल्याण बोर्ड के गठन का निर्णय

किसानों को 0% ब्याज पर कर्ज

भोपाल। जागत गांव हमार

सीएम डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में दमोह जिले के सिंग्रामपुर में रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती पर कैबिनेट बैठक आयोजित हुई। बैठक में कई अहम प्रस्ताव पर मुहर लगी। पंचायत मंत्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने बताया कि कैबिनेट बैठक में राज्य के विकास और विभिन्न सामाजिक योजनाओं को लेकर कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। सरकार ने जैन समाज के कल्याण के लिए जैन कल्याण बोर्ड का गठन का निर्णय लिया है। बोर्ड में एक अध्यक्ष और दो सदस्य होंगे। उनके ऑफिस और मानदेय का भी प्रबंध होगा। इस बोर्ड के अध्यक्ष के पहले दो साल श्वेतांबर और बाद के दो साल दिगंबर समाज से अध्यक्ष नियुक्त किया जाएगा। किसानों को 0 फीसदी ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाएगा, जिससे वे अपनी कृषि गतिविधियों को और मजबूत कर सकेंगे। सरकार ने किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण देने की योजना को जारी रखने को स्वीकृति दी है।

श्रीअन्न में 3900 रुपए बोनस

कैबिनेट ने किसानों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में प्रति हेक्टेयर 3900 रुपए की प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त राशि किसानों को दी जाएगी। इसका रकबा एक लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें कोदा कुटनी और रागी जैसे श्री अन्न का उत्पादन बढ़ाने किसानों को प्रेरित किया जा रहा है।

चिकित्सा शिक्षा में लाएंगे एकरूपता

पूर्ववर्ती चिकित्सा शिक्षा विभाग तथा लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के आपस में विलय होने से दोनों विभागों के अन्तर्गत संचालित नर्सिंग कॉलेजों में शैक्षणिक एकरूपता लाई जाए। इसके लिए स्वशासी नर्सिंग प्रशिक्षण संस्थानों को शासकीय नर्सिंग प्रशिक्षण संस्थान में परिवर्तित कर स्वशासी नर्सिंग कॉलेज के लिए पूर्व से स्वीकृत सभी 428 पदों को लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के सेवा भर्ती नियम अंतर्गत प्रशासित किया जाएगा।

दमोह में बनेगी हवाई पट्टी

दमोह जिले में हवाई पट्टी को उन्नत बनाने का फैसला लिया गया है, जिसके लिए कैबिनेट ने सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है। इससे क्षेत्र में आवागमन की सुविधा और निवेश के अवसर बढ़ सकें। सरकार ने निर्णय लिया है कि रानी दुर्गावती के नाम से एक संग्रहालय बनाया जाएगा। इस संग्रहालय में थिएटर सहित सभी आधुनिक सुविधाएं होंगी, जिससे राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रचारित किया जा सके।

वीरांगना को किया नमन| तेज, शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस की परिचायक रानी दुर्गावती की 500वीं जन्म जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री ने वीरांगना रानी दुर्गावती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। सीएम ने कहा कि रानी दुर्गावती ने कुल 52 लड़ाइयां लड़ी हैं जिनमें से 51 लड़ाई उन्होंने जीती हैं।

मृतकों के परिजनों को मुआवजा भी देगी राज्य सरकार

मोहन सरकार ने लू को दिया प्राकृतिक आपदा का दर्जा

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में गर्मियों के मौसम में कई सालों से तेज गर्मी और खतरनाक लू (हीटवेव) देखने को मिल रही है। ऐसे में अब मध्य प्रदेश सरकार ने लू (हीटवेव) को स्थानीय प्राकृतिक आपदाओं की सूची में शामिल कर लिया है। इस निर्णय के बाद हीटवेव से मरने वाले लोगों के आश्रितों को अब अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तरह दिए जाने वाले मुआवजे के समान मुआवजा दिया जाएगा। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार को यह बदलाव करने का निर्देश दिया था, जिसके एमपी सरकार ने अधिसूचना जारी की। प्रदेश सरकार ने आधिकारिक तौर पर मध्य प्रदेश आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के तहत हीटवेव को स्थानीय आपदा के रूप में अधिसूचित किया है। नया नियम अगले साल गर्मियों से लागू होगा।

सरकार ने जारी किया आधिकारिक बयान- अब हीटवेव से प्रभावित लोग व उनके आश्रित बाढ़, भूकंप और बिजली गिरने जैसी घटनाओं में मिलने वाली आर्थिक मदद के लिए पात्र होंगे। मध्य प्रदेश सरकार ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि राज्य सरकार आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के खंड 3.2 और भारत सरकार, गृह मंत्रालय के पत्र क्रमांक 33-03-2021-एनडीएम- एक, दिनांक 12 जनवरी 2022 द्वारा जारी राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष के गठन और प्रशासन पर दिशा निर्देशों के अनुसार लू को स्थानीय आपदा के रूप में अधिसूचित करती है।

इस साल हुईं 100 से ज्यादा मौत

गर्मी के दौरान तापमान में बढ़ोतरी के कारण उत्तरी भारत में कई मौतें हुई थीं। इस साल 1 मार्च से 19 जून के बीच देश में हीटवेव के कारण 114 लोगों की जान गई थी। वहीं, 40,000 से अधिक संदिग्ध हीटस्ट्रोक के मामले सामने आए थे। 19 जून 2024 तक हीटस्ट्रोक के कारण सबसे अधिक मौतें उत्तर प्रदेश में 37, बिहार में 17, राजस्थान में 16 और ओडिशा (13) में हुई थीं। हीटवेव को लेकर अलग-अलग परिभाषाएं हैं।

नेशनल पार्कों में पहले दिन उमड़ी पर्यटकों की भीड़

टाइगर और वन्यजीवों के दीदार से स्थानीय व्यवसायियों को मिली नई उम्मीदें

डॉ.बृजेश शर्मा। नरसिंहपुर

अक्टूबर से मध्य प्रदेश के प्रमुख नेशनल पार्कों - कान्हा, बांधवगढ़, पेंच और पन्ना टाइगर रिजर्व पर्यटकों के लिए खुल गए हैं। पहले ही दिन बड़ी संख्या में पर्यटकों ने टाइगर और अन्य वन्य जीवों का दीदार किया। इससे स्थानीय जिप्सी चालकों, गाइडों, होटल और रेस्टोरेंट मालिकों में नए सीजन को लेकर उत्साह और उम्मीदें जागी हैं। पार्क प्रबंधन का मानना है कि इस बार का पर्यटन सीजन बेहतर रहेगा। प्रदेश के प्रमुख नेशनल पार्कों- कान्हा किसली, बांधवगढ़, पेंच और पन्ना के टाइगर रिजर्व 1 अक्टूबर से पर्यटकों के लिए खुले, जिससे पार्कों में एक बार फिर चहल-पहल लौट आई। पहले ही दिन टाइगर, बायसन और कई अन्य जंगली जीवों के दीदार ने पर्यटकों को रोमांच और उत्साह से भर दिया।

कान्हा नेशनल पार्क में उम्मीदों की बहार- प्रदेश के सबसे बड़े और विस्तृत कान्हा नेशनल पार्क के चारों जोन में पहले दिन से ही पर्यटकों की भारी भीड़ देखी गई। यहां करीब तीन से साढ़े तीन महीने के बाद पार्क खुलने से जिप्सी चालकों, गाइडों और स्थानीय दुकानदारों के साथ ही होटल और रेस्टोरेंट मालिकों में नई उम्मीद जागी है। यह पार्क सालभर में करीब दो लाख सैलानियों को आकर्षित करता है, जहां मंडला जिले के चारों जोन में 150 गाइड और करीब ढाई सौ जिप्सियां उपलब्ध हैं। फील्ड डायरेक्टर एसके सिंह के अनुसार, पार्क में लगभग 115 टाइगर हैं और कुछ शावक भी हैं, जिनका दीदार पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण है। इसी आकर्षण के चलते इस सीजन में 13,339 विदेशी और 1,78,538 भारतीय पर्यटक यहां पहुंचे।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में टाइगर की दहाड़

437 वर्ग किलोमीटर में फैला बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व अपने बाघों के घनत्व के लिए प्रसिद्ध है। पहले दिन बड़ी संख्या में पर्यटकों ने यहां टाइगर और अन्य वन्य जीवों को देखकर खुशी जाहिर की। पार्क में 80 से अधिक जंगली जानवरों की प्रजातियां, 250 से ज्यादा पक्षियों की प्रजातियां और 37 स्तनधारी जीवों की उपस्थिति यहां के जैव विविधता को अनोखा बनाती है। यहां की 32 पहाड़ियों और घने वन क्षेत्र ने इस रिजर्व को पर्यटकों की पहली पसंद बना दिया है। ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा ने जिप्सी चालकों के लिए भी अच्छे अवसर खोले हैं। पहले ही दिन डेढ़ सौ से ज्यादा जिप्सियों ने पार्क में सफारी की। पार्क में 234 जिप्सियां और 125 गाइड पर्यटकों को सेवाएं देते हैं। हाल ही में यहां के स्थानीय लोगों ने 40 नई जिप्सियां खरीदी हैं, जिन्हें टाइगर रिजर्व से जोड़ने को लेकर गरमागरमी बनी हुई थी। क्षेत्रीय संचालक गौरव चौधरी के अनुसार इस सिलसिले में विधिवत प्रक्रिया का पालन किया जाएगा।

प्राकृतिक सौंदर्य और टाइगर के लिए प्रसिद्ध पन्ना टाइगर रिजर्व

प्राकृतिक सौंदर्य और बाघों के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध पन्ना टाइगर रिजर्व का पहला दिन भी पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय रहा। फील्ड डायरेक्टर अंजना एस तिर्की ने पार्क का फीता काटकर सीजन की शुरुआत की। पन्ना टाइगर रिजर्व के मुख्य द्वार पर फील्ड डायरेक्टर ने टूरिस्टों का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि इस बार का सीजन पिछले सभी सीजन से बेहतर रहेगा, क्योंकि यहां के बाघों का कुनबा तेजी से बढ़ रहा है। पहले ही दिन 35 जिप्सियां पार्क के अंदर गईं और दोनों समय की सफारी के लिए पूरी तरह बुक हो गईं। इस बार विदेशी पर्यटकों की भी ज्यादा आने की संभावना है। टूरिस्ट प्रद्युम्न मिश्रा ने बताया कि मानसून के समय जंगल और उसके राजा के दीदार के लिए उन्हें बेसब्री से इंतजार था।

पेंच अभ्यारण्य की भीड़ और संभावनाएं

सिवनी जिले का पेंच अभ्यारण्य भी पर्यटकों के बीच चर्चित रहा। हालांकि, अन्य पार्कों की तुलना में यहां पहले दिन भीड़ कम थी, लेकिन आने वाले दिनों में यहां अच्छी खासी भीड़ और पर्यटकों के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है।

जिला कार्यालय सहित विकासखंड स्तरीय कार्यालयो में आधा भी नहीं है स्टाफ

कृषि विभाग के दफ्तरों में स्टाफ का अकाल

कैसे हो अन्नदाता का कल्याण

शासन प्रशासन की नहीं टूट रही नींद, किसानों तक नहीं पहुंच रहा शासन की कई योजनाओं का लाभ

श्योपुर। जागत गांव हमार

किसानों के कल्याण के लिए भले ही शासन की तमाम योजनाएं संचालित हो रही है, लेकिन इन योजनाओं का लाभ किसानों तक पहुंचाने का जिम्मा संभाल रहे कृषि विभाग के दफ्तर, स्टाफ की भारी कमी से जूझ रहे हैं। कृषि विभाग के जिला कार्यालय में जहां आधे पद खाली पड़े हैं। वहीं विकासखंड स्तर पर खुले कार्यालयों में भी स्टाफ की गंभीर समस्या निर्मित हो रही है। इसके बाद भी शासन-प्रशासन का इस तरफ कोई ध्यान नहीं है। ऐसे में शासन के खेती को लाभ का धंधा बनाने के प्रयासों की सफलता पर सवालिया निशान लग रहा है, क्योंकि विभागीय अमले की कमी के कारण जरूरत किसानों तक शासन की कृषि योजना का लाभ नहीं पहुंच पा रहा है।

बात कृषि विभाग के जिला मुख्यालय पर संचालित हो रहे उप संचालक किसान कल्याण कार्यालय की करे तो इस कार्यालय को भलेही दो साल पहले नया भवन मिल गया है, लेकिन इसमें पूरा स्टाफ नहीं है। 22 पदों के मुकाबले यहां सिर्फ 12 की पदस्थी है,जबकि 10 पद खाली है। हालांकि उप संचालक सहित अन्य अधिकारियों के पद भरे है, लेकिन वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, स्टेनो ग्राफर, मुख्य लिपिक, लेखापाल, सहायक ग्रेड 2 के पद सालों से खाली पड़े है। जिन्हें अभी तक भरा नहीं गया है। उधर, अनुविभागीय कृषि अधिकारी कार्यालय श्योपुर में तो अनुविभागीय कृषि अधिकारी ही नहीं है। यह पद काफी समय से रिक्त बना हुआ है। आइ पदों के मुकाबले इस कार्यालय में सिर्फ 2 पदों भरे हैं और 6 पद खाली बने हुए हैं। जिन्हें भरने की जरूरत शासन की ओर से लंबा वक्त बीतने के बाद समझ नहीं गई है। इस कारण जहां विभागीय अमले को एक साथ कई शाखाओं का प्रभार देखने का पड़ रहा है। वहीं शासन की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए किसानों से विभागीय संपर्क के तार नहीं जुड़ पा रहे है।

प्रभारियों के भरोसे विकासखंड स्तरीय कार्यालय

कृषि विभाग का जिला कार्यालय जहां स्टाफ की कमी से जूझ रहा है। वहीं श्योपुर और विजयपुर में संचालित विकासखंड स्तरीय कार्यालय प्रभारियों के भरोसे चल रहे है। श्योपुर में संचालित वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी कार्यालय में 34 पदों के मुकाबले सिर्फ 11 पद ही भरे हुए है। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी का पद जहां सालों से रिक्त पड़ा है। वहीं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों के पद भी आधे से ज्यादा खाली है। विजयपुर के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी कार्यालय के भी कुछ ऐसे ही हाल है। यहां वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी के साथ-साथ कृषि विस्तार अधिकारियों के पद भी खाली बने है। यहां सिर्फ 10 की पदस्थी है। यहां 31 पद स्वीकृत है। यानि 21 पद खाली हैं।

एक बाबू तो ज्वाइनिंग देकर लौटा ही नहीं

कलेक्ट्रेट कार्यालय के ठीक सामने संचालित उप संचालक किसान कल्याण कार्यालय में सहायक ग्रेड 03 के दोनों पद भले ही कागजों में भरे हो,लेकिन धरातल पर एक पद एक साल से ज्यादा वक्त से खाली ही बना हुआ है। बताया गया है कि दूसरे सहायक ग्रेड 03 कर्मचारी ने कार्यालय में आकर विधिवत अपनी ज्वाइनिंग तो दी,लेकिन ज्वाइनिंग देने के बाद वह कर्मचारी दोबारा लौटकर कार्यालय में पहुंचा ही नहीं है। जिसकारण सहायक ग्रेड 03 का एक पद कागजों में भरे होने के बाद भी खाली चल रहा है।

विभाग के मुखिया भी आज हो जाएंगे सेवा निवृत्त

स्टाफ की कमी से जूझ रहे श्योपुर जिले के कृषि विभाग के मुखिया भी सोमवार को सेवा निवृत्त हो जाएंगे। जिस कारण उप संचालक का पद भी प्रभारी के भरोसे हो जाएगा। बता दें कि कृषि विभाग श्योपुर के उप संचालक पी गुजरे के सेवा निवृत्त होने की तिथि 30 सितंबर 2024 है और यह तिथि आज सोमवार को आ गई है। ऐसे में सोमवार को वे सेवा निवृत्त हो जाएंगे। जिसकारण कृषि विभाग में फिलहाल उप संचालक का पद भी रिक्त हो जाएंगा।

जो पद खाली हैं, उन्हें भरे जाने के लिए समय समय पर शासन को पत्र लिखे गए हैं। जो उपलब्ध स्टाफ है, उनके जरिए ही कृषि विभाग की योजनाओं का लाभ पात्र किसानों को दिए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पी गुजरे, उप संचालक, कृषि विभाग,श्योपुर

उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग कार्यालय

पद का नाम	स्वीकृत	भरे	खाली
उप संचालक कृषि	01	01	00
सहायक संचालक कृषि	04	04	00
वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी	01	00	01
कृषि विकास अधिकारी	02	01	01
स्टेनो ग्राफर	01	00	01
मुख्य लिपिक	01	00	01
लेखापाल	01	00	01
सहायक ग्रेड 02	03	00	03
सहायक ग्रेड 03	02	02	00
वाहन चालक	02	00	02
भृत्य	03	03	00
चौकीदार	01	01	00
योग	**22**	**12**	**10**

अनुविभागीय कृषि अधिकारी कार्यालय श्योपुर कार्यालय

पद का नाम	स्वीकृत	भरे	खाली
अनु कृषि अधिकारी	01	00	01
वस्तु विषय विशेषज्ञ	01	00	01
सहायक सांख्यिकी अधि.	01	00	01
सहायक ग्रेड 02	02	00	02
सहायक ग्रेड 03	01	00	01
भृत्य	02	02	00
योग	**08**	**02**	**06**

वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखंड श्योपुर कार्यालय

पद का नाम	स्वीकृत	भरे	खाली
वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी	01	00	01
कृषि विकास अधिकारी	03	00	03
कृषि विस्तार अधिकारी	28	09	19
सहायक ग्रेड03	01	00	01
भृत्य	01	01	00
योग	**34**	**11**	**23**

वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखंड कराहल कार्यालय

पद का नाम	स्वीकृत	भरे	खाली
वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी	01	01	00
कृषि विकास अधिकारी	02	00	02
कृषि विस्तार अधिकारी	16	07	09

वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखंड विजयपुर कार्यालय

पद का नाम	स्वीकृत	भरे	खाली
वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी	01	00	01
कृषि विकास अधिकारी	02	00	02
कृषि विस्तार अधिकारी	16	08	08

किसानों को सहयोग देने में जिला कृषि-मौसम कार्यालयों की भूमिका

ऋषिका पारदीकर
स्वतंत्र, पर्यावरण पत्रकार

शरद पवार समूह की राज्यसभा सांसद फौजिया खान ने 6 अगस्त, 2024 को मानसून सत्र के दौरान 199 जिला कृषि-मौसम इकाइयों को बंद करने के निर्णय की और ध्यान आकर्षित किया। डा. खान के अनुसार, 'स्वधानित प्रणालियों मानवीय भागीदारी की जगह नहीं से सकती हैं तथा स्थानीय सहकारों के अद्वितीय मूल्यों को खत्म नहीं किया जा सकता। 29 अगस्त, 2024 को प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (1949 से भारत की सबसे बड़ी और सबसे भरोसेमंद समाचार एजेंसी) ने बताया कि भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ग्रामीण कृषि मौसम सेवा योजना के तहत जिला कृषि मौसम इकाइयों को पुनर्जीवित करने की योजना बना रहा है।

आईएमडी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से 2018 में 199 डीएएमयूएस की स्थापना की। इसका उद्देश्य विकासखण्ड स्तर पर मौसम के आंकडों का उपयोग कर कृषि सलाह तैयार कर प्रसारित करना था। मार्च, 2024 में आईएमडी द्वारा जारी एक आदेश के बाद डीएएमयूएस को बंद कर दिया गया।

क्यों महत्वपूर्ण हैं कृषि-मौसम इकाइयां?

भारत में नरशय 70प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत है। वे दशकों से चले आ रहे कृषि संकट की पृष्ठभूमि में बड़े पैमाने पर वर्षा आधारित खेती करते हैं, जो अब जलवायु परिवर्तन से संबंधित मौसम परिवर्तनशीलता से प्रभावित है। जानवायु बदान रही है। मानसून की शुरुआत और वापसी की तिथियों बदल गई हैं। हम लंबे समय तक भूखे और भारी बारिश के दौर भी देखते हैं। किसानों को यह जानकारी होनी चाहिए क्योंकि इससे पहले प्रकाशित होती है पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पूर्व सचिव माध्वन राजीवन ने द हिंदू को बताया। डीएएमयूएस कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) में स्थित थे। मौसम विज्ञान और कृषि में प्रतिक्षित वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को डीएएमयूएस स्टाफ के रूप में भर्ती किया गया था। उन्होंने डीएएमयूएस द्वारा उपलब्ध करार गए मौसम के आंकड़ों जैसे कि वर्षा, तापमान और हवा की गति का उपयोग बुवाई और कटाई, उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग, सिंचाई आदि से संबंधित कृषि समाह तैयार करने के लिए किया। ये सलाह पूरे देश में लाखों किसानों को स्थानीय भाषाओं में सप्ताह में दो बार निःशुल्क भेजी जाती थी। इन्हें टेक्स्ट मैसेज, व्हाट्सएप ग्रुप, समाचार पत्रों और डीएएमयूएस कर्मचारियों और केवीके अधिकारियों के व्यक्तिगत संचार के माध्यम से भी साझा किया जाता था। चूंकि ये सलाह मौसम की जानकारी पहले से ही दे देती थी, इसलिए इससे किसानों को सिंचाई जैसी गतिविधियों की योजना बनाने में मदद मिलती थी। ये सबाह सूखे और भारी बारिश जैसी चरम पटनाओं के लिए भी प्रारंभिक चेतावनी के रूप में काम करती थी। पिछले कुछ वर्षों में किए गए कई अध्ययनों ने कृषि-मौसम सजाइ के जाओं पर जोर दिया है।

डीएएमयूएस को क्यों बंद कर दिया गया?: आर्टिकल 14 की रिपोर्ट के अनुसार, नीति आयोग ने डीएएमयूएस की भूमिका को गलत तरीके से पेश किया और निजीकरण की भी मांग की। नीति आयोग ने झूटर दावा किया कि कृषि-मौसम डेटा स्वचालित है. जिससे

डीएएमयूएस कर्मचारियों की भूमिका कम हो गई। वास्तव में डीएएमयूएस कर्मचारियों ने डीएएमयूएस द्वारा मौसम के आंकड़ों के आधार पर कृषि सलाह तैयार करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। ये सलाह जिलों में विकासखण्ड स्तर पर तैयार की गई और फिर स्थानीय भाषाओं में किसानों को बताई गई। नीति आयोग ने ऐसी सेवाओं के मुद्रीकरण की भी मांग की, जबकि मौजूदा योजना के अनुसार सभी किसानों को कृषि-मौसम की जानकारी मुफ्त में दी जाती है।

कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बैंगलोर (कर्नाटक) के प्रोफेसर डा. एमएन थिम्मेगौड़ा जी ने कहा, डीएएमयूएस को बंद करना कोई बुद्धिमानी भरा निर्णय नहीं था। देश भर के किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए योजना को मजबूत किया जाना चाहिए था।

फरवरी में गुजरात स्थित एसोसिएशन ऑफ एग्रोमेटोरोलाजिस्ट ने प्रधानमंत्री जी को पत्र निखकर कृषि-मौसम इकाइयों को बंद करने के निर्णय के बारे में गहरी चिंता और निराशा व्यक्त की, साथ ही इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे डीएएमयूएस में कृषक समुदाय के बीच जलवायु लचीलापन बनाने में मदद की। उसी महीने, केंद्रीय मंत्री नितिन बडकरी जी ने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय में वर्तमान राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह को पत्र लिखकर सेवाओं को जारी रखने की मांग की।

निजी कंपनियों के बारे में क्या?

वर्तमान में, मौसम संबंधी सलाह देने वाले क्षेत्र में मुट्ठी भर निजी कंपनियां हैं। लेकिन ऐसी सेवाओं की वहनीयता के बारे में गंभीर चिंताएं हैं। डॉ थिम्मेगौड़ा ने कहा, 'निजी कंपनियों लाभ के उद्देश्य से काम करती हैं एवं छोटे और सीमांत किसानों के लिए कीमतें बहुत ज्यादा हो जाती हैं. जो कि बहुसंख्यक हैं। उदाहरण के लिए, विचार करें कि कैसे कुछ कंपनियों वर्तमान में अपनी सप्ताह के लिए वार्षिक सदस्यता के लिए प्रति फसल 10,000 रुपये का शुल्क लेती हैं। इसका मतलब है कि सब्जियां और अनाज उगाने वाले कई किसानों के लिए 20,000-40,000 रुपये का निवेश होगा। कुछ कंपनियों कृषि संबंधी समाह के लिए वार्षिक सदस्यता के लिए 60,000-80,000 रूपये तक की उच्च दर भी लेती हैं।

इसके अलावा, डॉ थिम्भेगौड़ा ने बताया कि उर्वरकों आदि के उपयोग से संबंधित कृषि-मौसम संबंधी सलाह में पक्षपात हो सकता है। 'उवर्ज़को और कीटनाहकों में उनकी सिफारिशें कुछ ब्रांडों के प्रति पक्षपाती हो सकती हैं।

> भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से आईएमडी ने 2018 में 199 जिला कृषि-मौसम इकाइयों की स्थापना की। इसका उद्देश्य आईएमडी से मौसम डेटा का उपयोग करके विकासखण्ड स्तर पर कृषि सलाह तैयार कर प्रसारित करना था।

> डीएएमयू स्टाफ ने आईएमडी द्वारा उपलब्ध कराए गए मौसम संबंधी आंकड़ों जैसे वर्षा, तापमान और हवा की गति केन उपयोग बुवाई और कटाई, उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग, सिंचाई आदि से संबंधित कृषि सलाह तैयार करने के लिए किया।

> वर्तमान में मौसम संबंधी समाह देने के क्षेत्र में मुट्ठी भर निजी कंपनियां काम कर रही हैं। लेकिन ऐसी सेवाओं की वहनीयता को लेकर गंभीर चिंताएं है।

> अभी वर्तमान में जिमा कृषि मौसम इकाइयों के सभी कर्मचारी माननीय उच्च न्यायालय की शरण में है एवं नियमित रूप से (प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार) कृषकों को मौहम आधारित कृषि सलाह प्रदान करने के साथ ही आकस्मिक मौसम परिवर्तन समाह भी प्रदान कर रहे हैं।

> 29 अगस्त, 2024 को प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (1949 से भारत की सबसे बड़ी और सबसे भरोसेमंद समाचार एजेंसी) ने बताया कि भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ग्रामीण कृषि मौसम सेवा योजना के तहत जिला कृषि-मौसम इकाइयों को पुनजीवित करने की योजना बना रहा है। इस संदर्भ में आज दिनांक तक भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आधिकारिक पुष्टि प्राप्त नहीं हुई है।

पशुओं में तनाव का होना आवश्यक या अनावश्यक?

» डॉ. दीपिका डायना जैस्सी, » डॉ. मनोज कुमार अहिरवार, » डॉ. ज्योतसना शक्करपूड़े, » डॉ. आम्रपाली भीमटे, » डॉ. श्वेता राजोरिया, » डॉ. कविता रावत, » डॉ. मधू शिवहरे, » डॉ. नवल सिंह रावत
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू मध्य प्रदेश

वास्तविक या काल्पनिक खतरे की प्रतिक्रिया होने पर पशु शरीर में तनाव उत्पन्न होता है, जिसमें शरीर उस स्थिति से निपटने या लड़ने के लिए तैयार होता है। यह स्ट्रेस हार्मोन सक्रिय होने के कारण विकसित होती है। इस दौरान शरीर के एड्रेनालिन व कोर्टिसोल, जिन्हे स्ट्रेस हार्मोन भी कहा जाता है सक्रिय हो जाते हैं, जो जीव को वास्तविक या काल्पनिक खतरे से निपटने या बचने के लिए तैयार करते हैं। तनाव के कई कारक होतें हैं जिन्हे स्ट्रेससार भी कहा जाता है। पशु यदि तनाव में है तो उसको हम उसके व्यवहार से भी पहचान सकते हैं जैसे की आक्रामक बर्ताव जो कई बार पकड़ में भी नहीं आते हैं।

तनाव शरीर के लिए एक प्राकृतिक रक्षा प्रणाली की तरह काम करता है। हालांकि, यदि यह बिना किसी कारण के बार-बार हो रहा है और इसके साथ अन्य समस्याएं भी हो रही हैं, तो यह शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। तनाव में शरीर तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार हो जाता है; धड़कने तेज होने लगती है, श्वसन दर का बढ़ना, मांसपेशियों का कठोर हो जाना, रक्तचाप का स्तर भी बढ़ जाता है और पाचन तंत्र की गतिविधि में गिरावट या कमी देखी जाती है, प्रजनन दर एवं उत्पादन में कमी हो जाती है।

तनाव के प्रकार

तनाव प्रतिक्रियाओं के लिए जिम्मेदार तत्वों को या तो बाह्य, मनोवैज्ञानिक या व्यवहार संबंधी कारकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

बाह्य कारक

बाह्य कारक जैसे की तापमान या ऊष्मीय तनाव उद्धरण के लिए शीत एवं उत्ताप तनाव। जो तापमान के अधिक एवं कम होने के परिणामस्वरूप होता है। उपरोक्त तनाव को कम किया जा सकता है, जैसे हीट स्ट्रेस होने पर पशु को छायादार जगह में रखना, पर्याप्त पानी की व्यवस्था, स्प्रिंकलर इत्यादि।

मनोवैज्ञानिक कारक

पशु कल्याण के मोलभूत सिद्धांतों के विपरीत रख-रखाव करने पर पशुओं में मनोवैज्ञानिक तनाव उत्पन्न होते हैं जैसे की पर्याप्त पानी एवं भोजन उपलब्ध ना होना, दर्द-चोट - बीमारियों से सुरक्षा ना होना, किसी शिकारी पशुओं का डर होना, प्रापर रहने या हाउज़िंग की व्यवस्था ना होना, उनके झुंड में से किसी की मृत्यु हो जाना, उनके झुंड से उनके बच्चे या किसी पशु का खो जाना, किसी दर्दनाक दुर्घटनाओं का अनुभव करना इत्यादि। इस तरह के तनाव से पशुओं में शारीरिक विकार और बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती है।

तनाव के लक्षण

तनाव के लक्षण आमतौर पर शारीरिक, भावनात्मक व्यावहारिक रूप से विकसित होते हैं। हालांकि, तनाव से होने वाले लक्षण प्रत्येक में उनके शरीर के अनुसार अलग-अलग भी हो सकते हैं। हालांकि, तनाव से होने वाले प्रमुख शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक लक्षण कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं जिन्हे पहचानना और सही समय पर उससे पशु को बाहर निकालना अतिआवश्यक हो जाता है, जिससे कि उसमे शारीरिक विकार उत्पन्न ना हो सके और यदि वह दुधारू पशु है तो उससके प्रजनन एवं दुग्ध उत्पादन में किसी प्रकार की गड़बड़ी ना हो।

तनाव से होने वाले शारीरिक लक्षण

ज्यादा पसीना आना, मांसपेशियों में ऐंठन व मरोड़
बेहोश होना (गंभीर मामलों में)
नसों में ऐंठन आना, चक्कर आना, नींद न आना या अत्यधिक नींद आना, बदहजमी या दस्त होना

तनाव से होने वाले भावनात्मक लक्षण

क्रोध, ध्यान न लगा पाना
थका रहना, अपने आप को सुरक्षित महसूस न करना और बेचैन रहना।

जलवायु परिवर्तन का सामना करने तैयार नहीं भारत सहित दुनिया के कई शहर

आज दुनिया की आधी आबादी शहरों में रह रही है, जिसको लेकर कयास लगाए जा रहे हैं कि 2050 तक यह आंकड़ा बढ़कर 70 फीसदी तक पहुंच जाएगा। हालांकि जहां शहरों में रहने के अपने फायदे हैं वहीं चुनौतियां भी कम नहीं। देखा जाए तो दुनिया में जिस तेजी से शहरों का विस्तार हो रहा है, वो अपने साथ अनगिनत समस्याएं भी पैदा कर रहा है। इतना ही नहीं वैश्विक स्तर पर जिस तरह जलवायु में बदलाव आ रहा है और तापमान में वृद्धि हो रही है उसका असर शहरों में भी खुल कर सामने आने लगा है। शहरों में जलवायु परिवर्तन के कारण तेजी से उभरती समस्याओं के साथ-साथ स्वास्थ्य पर पड़ते प्रभावों को उजागर करते हुए येल स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, रेसिलिएंट सिटीज नेटवर्क और द रॉकफेलर फाउंडेशन ने एक नई रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट में न केवल जलवायु परिवर्तन से उभरती समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इससे जुड़े समाधानों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई है।

इस रिपोर्ट में 52 देशों में 118 शहरों के 200 नेताओं के पर किए एक सर्वेक्षण को भी शामिल किया गया है। उन लोगों से जलवायु से जुड़े खतरों से निपटने के लिए उनकी तैयारियों के बारे में भी पूछा गया था। अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के शहरों के महत्वपूर्ण लोगों के साथ किए साक्षात्कार को भी इस रिपोर्ट में साझा किया गया है। यदि भारतीय शहरों को बात करें तो इस रिपोर्ट में अहमदाबाद, पुणे, और सूरत शामिल थे।

रिपोर्ट के मुताबिक एक तरफ तेजी से बढ़ती आबादी इन शहरों के लिए समस्या पैदा कर रही है। वहीं हरे-भरे क्षेत्र तेजी से सिकुड़ रहे हैं, जो बढ़ते तापमान के असर को सीमित करने में मददगार होते हैं। इन शहरों के साथ एक बड़ी समस्या इनका पुराना पड़ता बुनियादी ढांचा भी है, जो बाढ़, तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं का सामना करने के लिए तैयार नहीं है।

जलवायु परिवर्तन से शहरों में हावी हो रही बीमारियां: इसके साथ ही जलवायु में आता बदलाव स्वास्थ्य समस्याओं को भी पहले से बदतर बना रहा है, उदाहरण के लिए मौसमी बदलावों और बढ़ते तापमान की वजह से डेंगू जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। देखा जाए तो वो देश जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, वहां शहरों को कहीं ज्यादा बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन शहरों में कमजोर तबके पर असमान रूप से कहीं ज्यादा असर डाल रहा है, ऐसे में शहरों को इन समस्याओं से निपटने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

प्रशिक्षण में ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया

पोषण-स्वावलंबन के लिए श्रीअन्न का प्रसंस्करण आवश्यकः डॉ. एके पांडेय

रीवा। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा के तत्वावधान में जिला पंचायत, रीवा तथा एनआरएलएम, रीवा के सहयोग से पोषण तथा स्वावलम्बन के लिए पांच दिवसीय रोजगारोन्मुखी कौशलसंवर्धन प्रशिक्षण, आयोजित किया गया जिसमें पैंसठ ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) तथा प्रशिक्षक डॉ. किंजल्क सी. सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण में करके सीखें के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए प्रशिक्षणार्थियों ने बाजरे के लड्डू, रागी के लड्डू, ज्वार की बर्फी, बाजरा, ज्वार, रागी, मक्का की सलोनी, मक्का की नमकीन, रागी की इडली, डोसा, केक, कुकीज, और चॉकलेट का निर्माण किया गया। कोदो, कुटकी सांवा और काकून के खीर जैसे व्यंजनों में उपयोग के बारे में बताया गया।

श्रीअन्न की रोटी बनाना सरल नहीं

वैज्ञानिक (खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) एवं प्रशिक्षक डॉ. चन्द्रजीत सिंह ने बताया कि चूंकि श्रीअन्न में ग्लूटैन अनुपस्थित होता है। अतः इनकी रोटी बनाना सरल नहीं है। ऐसे खाद्य उत्पादों का निर्माण सिखाया गया, जिनकी निर्माण विधि सरल है। इनमें स्वास्थ्यवर्धक खनिज लवण विषेशकर कैल्शियम और लौह तत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो कि हड्डियों के स्वास्थ्य, पाचन और डायबटीज को नियंत्रित रखने के लिए तथा रक्ताल्पता को दूर रखने में सहायक होता है। किंतु श्रीअन्न रूक्ष होता है। अतः कब्ज और वात का सामना कर रहे लोगों को इसका सेवन कम करना चाहिए। समामन्य तौर पर स्वस्थ्य व्यक्तियों द्वारा इसका सेवन देसी घी के साथ करने से इसकी रुक्षता में कमी लाई जा सकती है। कार्यक्रम में केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. अजय कुमार पांडेय ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में विश्व गायत्री परिवार से प्रभाकांत तिवारी, एसपी मिश्रा रवीन्द्र सिंह एवं सविता मिश्रा उपस्थित थे। कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आरपी जोशी ने अपने उद्बोधन और प्रक्षेत्र भ्रमण के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को अन्न की विभिन्न किस्मों से परिचित करवाया। मौसम वैज्ञानिक संदीप शर्मा ने श्रीअन्न की खेती में मौसम की भूमिका विषय पर प्रकाश डाला।

कृषि विज्ञान केंद्र ग्वालियर में पोषण कार्यशाला का आयोजन

ग्वालियर। जागत गांव हमार

गत दिवस कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग, ग्वालियर के साथ संयुक्त रूप से कृषि विज्ञान केन्द्र में पोषण कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय पोषण माह 2024 के अंतर्गत, केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. कुशवाह के मार्गदर्शन में केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. रीता मिश्रा द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला के समापन अवसर पर कृषि विश्वविद्याल, ग्वालियर के अधिष्ठाता डॉ. एस.एस.तोमर मुख्य अतिथि तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के डी.एस.जादौन अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास विभाग के सहायक संचालक राहुल पाठक एवं न्यूट्रीशन इंटरनेशनल के संभागीय समन्वयक मिर्जा रफीक बेग विशिष्ठ अतिथि के रूप में, डॉ. जितेन्द्र राजपूत, वैज्ञानिक-कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर, राघवेन्द्र धाकड़ परियोजना अधिकारी शहर क्रंमाक 02 एवं रेखा तिवारी, परियोजना अधिकारी शहर क्रंमाक 05 सम्मिलित रहे। कार्यशाला में पोषण संबंधी क्विज के आयोजन के साथ-साथ पौष्टिक व्यंजन प्रतियोगिता प्रमुख आकषज्ण का केन्द्र रहीं, जिसमें 77 पर्यवेक्षक एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कार्यशाला में पोषण संबंधी व्याख्यान द्वारा प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन भी किया गया, जिससे कृषक महिलाओं, किशोरी बालिकाओं एवं प्री-स्कूल के बच्चों में पोषण की कमी से होने वाली गंभीर समस्याओं जैसे कुपोषण, एनीमिया, आदि से बचाया जा सके। कार्यक्रम के अंत में मनोबल बढ़ाने के लिए विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र के साथ-साथ पौष्टिक पौधे भी वितरित किए गए।

कृषि विज्ञान केंद्र में स्वच्छता दिवस मनाया गया

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ द्वारा गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में स्वच्छता दिवस अंतर्गत कार्यालय परिसर एवं कृषक भवन के आस पास साफ-सफाई का कार्य किया गया। इस अभियान में प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके. सिंह, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह, हंसनाथ खान, जयपाल छिगारहा, रावे छात्रों एवं श्रमिकों ने सफाई अभियान में 2 घंटे श्रमदान किया। इस दौरान कार्यालय भवन एवं कृषक भवन के चारों तरफ पेड़-पौधों की सफाई एवं छटाई का कार्य किया गया और पौधों की सफाई कर थाला भी बनाए गए। कचरे को एकत्रित कर केंचुआ खाद बनाने के लिए गड्डे में डाला गया, जिससे एक अच्छा कम्पोस्ट खाद तैयार हो सके और जो फसलोत्पादन में काम आएगा। जिससे हमारा रासायनिक उर्वरकों पर होने वाला व्यय कम होगा साथ ही भूमि की गुणवत्ता में भी सुधार आएगा और फसलें व सब्जियां उच्च गुणवत्ता की एवं स्वादिष्ट पैदा होगी, जो हमारे स्वास्थ में काफी लाभकारी होगी। इस दौरान वैज्ञानिकों एवं रावे छात्रों ने कार्यालय परिसर को हमेशा स्वच्छ एवं सुंदर रखने का संकल्प लिया साथ ही स्वच्छता की सेवा के संकल्प को गांव-गांव में किसानों तक स्वभाव स्वच्छता एवं संस्कार स्वच्छता का संदेश पहुँचाने का निश्चय किया गया। कार्यक्रम के अंत में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री को भी उनके जन्म दिवस पर याद किया गया तथा उनका किसानों के प्रति जुड़ाव और भारतीय कृषि में उनके बहुमूल्य योगदान पर भी विशेष चर्चा की गयी।

पारम्परिक तरीकों से निराई, गुड़ाई

महिला किसानों ने जाना अजोला उत्पादन तकनीक और उपयोगी कृषि यंत्र

शहडोल। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल में महिलाओं भ्रमण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल के वैज्ञानिक दीपक चैहान द्वारा कृषक महिलाओं को बताया की ग्रामीण महिलायें भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, ये महिलाएं कृषि से सम्बंधित सभी प्रमुख कार्यों में भाग लेती हैं जिनमे बीज का चुनाव, बीज उपचार, गोबर खाद तैयार करना, पौध रोपण, फसल की निदाई गुड़ाई, खाद छिड़कना, अनाज भंडारण आदि शामिल है। कृषि से संबधित क्रियाकलापों में पशुपालन एक ऐसा क्षेत्र है, जिससे जुड़े हर एक कार्य को ज्यादातर महिलाएं ही करती हैं। जैसे पशुओं को चारा खिलाना, दूध दोहना, पशुओं की देखभाल करना आदि। पारम्परिक तरीकों से कृषि के कार्य जैसे निराई, गुड़ाई, पौध रोपण, फसल की कटाई आदि कार्य झुक कर करने से महिलाओं को थकान तो होती है। परिणामस्वरूप उनकी कार्यक्षमता में कमी आने लगती है।

कृषक महिलाओं को उपकरणों की जानकारी जरूरी

कृषक महिलाओं को विभिन्न उपकरणों एवं यंत्रों के बारे में जानकारी हो जिससे फसल उत्पादन, कृषि प्रबंधन एवं प्रसंस्करण में महिलाओं द्वारा किए जा रहे अनावश्यक श्रम को कम किया जा सके। उनकी श्रम क्षमता को बढ़ाया जा सके। कृषक महिलाओं के लिए कुछ उपकरणों जैसे मूंगफली छीलक यंत्र, हस्तचलित द्विछलनी अनाज सफाई यंत्र, सब्जी रोपाई यंत्र, हस्तचलित रोटरी डिब्लर (चक्रीय रोपछिद्रक), आलू छिलाई यंत्र, आलू चिप्स यंत्र, की जानकारी दी गई। वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने अजोला में प्रोटीन आवश्यक एमिनो अम्ल, विटामिन एवं खनिज जैसे केल्सियम, फास्फोरस, पोटाश आदि पाए जाते है। अजोला खिलने से पूवज़ इसे एकत्रित कर अच्छे से धोना चाहिए ताकि गोबर की गंध अजोला से निकल जाए। अजोला को पशु आहार के साथ मिला कर खिलाना चाहिए, इसे उत्तम पशु आहार के रूप में विकसित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पोषण माह के अंतगत स्कूली छात्रों को संतुलित आहार एवं वाटिका का महत्व बताया

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके जाटव एवं डॉ. आईडी सिंह द्वारा राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बम्होरी कला, टीकमगढ़ के 84 छात्र एवं छात्राओं को पोषण वाटिका के महत्व, इसकी उपयोगिता एवं संतुलित आहार के बारे में जानकारी दी गयी। वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि संतुलित आहार में पर्याप्त मात्रा में हरी सब्जियां, दाल, चावल, सलाद, फल एवं दूध होना चाहिए। संतुलित आहार से शरीर का विकास एवं याददाश्त अच्छी रहती है और शरीर में बीमारियों के प्रति प्रतिरोधकता क्षमता बढ़ती है। शरीर की बढ़वार एवं स्वस्थ रहने के लिए विटामिन्स, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, रेसा, आयरन एवं अन्य पोषक तत्व एक निश्चित मात्रा में मिलना चाहिए। इन सबकी पूर्ति के लिए अपने घरों के आसपास पोषण वाटिका तैयार करें, उसमें तीनों मौसम की सब्जियां लगाना सुनिश्चित करें। जिससे परिवार को ताजी, स्वच्छ एवं कीटनाशक रहित सभी प्रकार की सब्जियां पर्याप्त मात्रा में खाने को मिलेगी और विटामिन ए, बी एवं सी की पूर्ति के लिए फलदार पौधे जैसे-पपीता, केला, आम, अमरूद, नींबू, मौसमी, आंवला, कटहल एवं मुनगा (सहजन) आदि के पौधे अवश्य लगायें एवं उनकी देखभाल करें। अपने भोजन में अन्न फसलों जैसे-बाजरा, ज्वार, रागी, कोदो एवं कुटकी को भी शामिल करें, जिससे शरीर में आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं फास्फोरस आदि महत्वपूर्ण पोषण तत्वों की पूर्ति होगी और शरीर रोग मुक्त रहेगा।

स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के समापन पर हुआ स्वच्छता दिवस का आयोजन

हम सब ने यह ठाना है...भारत को स्वच्छ बनाया है...के लगाए नारे

शिवपुरी। जागत गांव हमार

संस्कार स्वच्छता, स्वभाव स्वच्छता थीम के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक चलाया गया। भाकृअनुप -कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन 9, जबलपुर के निर्देशानुसार कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के तहत कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी द्वारा प्रति दिन केन्द्र पर अथवा किसी अन्य संस्था अथवा किसी ग्राम में विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें प्रति दिन भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन 9, जबलपुर से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुसार कार्यक्रम आयोजित कर जनमानस को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य किया गया।

स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया

2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिन पर कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी पर स्वच्छता दिवस का आयोजन किया गया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के मार्गदर्शन में परिसर के अन्दर एवं बाहर मुख्य सड़क ग्राम पिपरसमा में केन्द्र के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ रावे कार्यक्रम अंतर्गत बी.एस.सी कृषि के छात्रों सहित स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। स्वच्छता जागरूकता हेतु नारे जैसे हम सब ने यह ठाना है भारत को स्वच्छ बनाया है, स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत इत्यादि नारे लगाए गए। रैली उपरांत आवसीय परिसर में केन्द्र में निवासरत परिसर के सदस्यों को शामिल करते हुये साफ सफाई की गई एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता करते हुए स्वच्छता बनाए रखने की शपथ भी ली गई। समापन कार्यक्रम का नेतृव वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डा. पुनीत कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र अधिकारी एवं कर्मचारियों में डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह, डॉ. एएल बसेडिया, योगेश चन्द्र रिखाड़ी, एनके कुशवाहा, सतेन्द्र गुप्ता, विजय प्रताप सिंह एवं इन्द्रजीत गढ़वाल शामिल रहे।

किसानों को बायो फोर्टीफजइड किस्मों के विशेषताएं बताई

कृषि एवं उद्यनिकी मैदानी अधिकारियों को रबी फसलों पर वैज्ञानिकों ने दिया प्रशिक्षण

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के वैज्ञानिकों द्वारा 29 सितंबर को कलेक्टर अवधेश शर्मा की उपस्थिति में कृषि एवं उद्यनिकी मैदानी अधिकारियों को रबी फसलों की उन्नत तकनीकी पर कृषि महाविद्यालय के सभागार में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में भारतीय किसान संघ के जिला अध्यक्ष शिव मोहन गिरी, जिला जैविक खेती प्रमुख संतोष लोधी, जिला कोषाध्यक्ष अवधेश गिरी गोस्वामी, जिला कार्यकारिणी सदस्य राघवेंद्र सिंह घोष, रामकिशन पाल टीकमगढ़ तहसील अध्यक्ष रामचंद्र श्रोती द्वारा भी किसानों के बीच, खाद एवं सिंचाई सम्बन्धी समस्याओं पर चर्चा की गई। प्रशिक्षण में अधिष्ठाता डॉ. डीएस तोमर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, उपसंचालक कृषि अशोक कुमार शर्मा, उपसंचालक पशु डॉ. आरके जैन, सहायक संचालक मत्स्य मेघा गुप्ता, उद्यनिकी विभाग से वरिष्ठ उद्यनिकी विकाश अधिकारी ओमप्रकाश मालवीय, सहकारिता, फसल बीमा कंपनी एवं कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह, यू.एस.धाकड़, डॉ. एसके जाटव एवं डॉ. आईडी सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण में कलेक्टर ने कहा मैदानी कृषि अधिकारियों को किसानों के व्हाट्सएप ग्रुप बनाया जाए और ग्रुप में अधिक से अधिक किसानों को जोड़ा जाए। गांव में किसानों के साथ चौपाल आयोजित कर रबी फसलों की उन्नत किस्मों और डी.एपी उर्वरक की जगह एनपीके, सिंगल सुपर फास्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश के उपयोग के बारे में बताया जाए। डॉ. बी.एस. किरार ने कृषि विज्ञान केंद्र के चयनित गांव कोडिया एवं कांटी में किये गए कार्यो की जानकारी दी गई और फसल विवधीकारण में सरसों की खेती को ज्यादा बढ़ावा देने पर चर्चा की गई। डॉ. एसके जाटव द्वारा चना, मटर, गेहूं एवं सरसों की उन्नत नई एवं बायो फोर्टीफजइड किस्मों के विशेषताएं बताई गई।

सभी वैज्ञानिकों द्वारा पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया

डॉ एसके. सिंह वैज्ञानिक द्वारा प्याज की उन्नत तकनीक, डॉ. यू.एस. धाकड़ द्वारा गेहूं, चना, मट.र मसूर एवं सरसों की उन्नत तकनीक पर और डॉ. आर.के. प्रजापति द्वारा मशरूम उत्पादन तकनीक एवं मशरूम की संभावनाओं पर एवं डॉ. आई.डी. सिंह द्वारा फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व एवं उनकी कमी के लक्षणों पर सभी वैज्ञानिकों द्वारा पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया। अंत में उप- संचालक कृषि अशोक कुमार शर्मा एवं संचालक आत्मा परियोजना भारत राजवंशी, उप संचालक पशु डॉ. आर.के. जैन, सहायक संचालक मत्स्य से मेघा गुप्ता, वरिष्ठ उद्यनिकी विकाश अधिकारी ओमप्रकाश मालवीय एवं सहकारिता अधिकारी, मार्क-फेड अधिकारियों द्वारा भी अपने-अपने विभाग की योजना की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में कंप्यूटर एवं प्रेजेंटेशन में हंसनाथ खान एवं जयपाल छिगारहा का विशेष सहयोग रहा।

डॉ. शालिनी चक्रवर्ती ने तिलहन आदर्श ग्राम का किया निरीक्षण

पन्ना। जागत गांव हमार

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना द्वारा खरीफ 2024 में समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं तिलहन आदर्श ग्राम अंतर्गत इटवाखास एवं जनवार में मूंगफली की उन्नत किस्म जीजेजी-32 एवं तिल किस्म जीटी-5 का प्रदर्शन दिया गया था। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- अटारी जोन-9 जबलपुर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शालिनी चक्रवर्ती द्वारा तिलहन आदर्श ग्राम इटवाखास एवं जनवार में कृषकों बद्री गिरी, मुकेश पटेल, जगदीश अवस्थी, किशोर सिंह यादव, रामयश बाजपेयी, भूपेन्द्र सिंह, टीआर नायक, पारिक्षित बाल्मीक, श्यामलाल गौंड, हेतराम कुशवाहा, भगवत कुशवाहा, लखनलाल कुशवाहा के खेतों में लगी मूंगफली एवं तिल की फसल का निरीक्षण किया। डॉ. चक्रवर्ती द्वारा प्रक्षेत्र दिवस के दौरान कृषकों से तिलहन आदर्श ग्राम के तहत ली गई मूंगफली एवं तिल की फसलों के संबंध में विस्तार से चर्चा की। कृषकों के प्रक्षेत्र में लगी ज्वार फसल में अर्गट बीमारी, धान में तना छेदक, जीवाणु झुलसा एवं पत्ती लपेटक तथा मूंगफली फसल में अल्टरनेरिया ब्लाईट की समस्या देखी गई। डॉ. आरके जायसवाल, पौध संरक्षण वैज्ञानिक द्वारा उक्त समस्या के निदान के लिए उचित सलाह दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र, पन्ना के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पीएन त्रिपाठी द्वारा डॉ. शालिनी चक्रवर्ती को कार्यालय स्थित विभिन्न प्रदर्शन ईकाईयों का भ्रमण कराया, भ्रमण के दौरान डॉ. आरपी सिंह, रितेश बागोरा, देशराज प्रजापति उपस्थित रहे।

गांधी जयंती पर ली स्वच्छता की शपथ, सफाई कर्मियों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा के अधिष्ठाता डॉ. एसके त्रिपाठी के मार्गदर्शन में कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा मप्र में कृषि वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा गांधी जयंती पर स्वच्छता की शपथ ली गई और केंद्र में साफसफाई की गई। एक पखवाड़े से चल रहे कार्यक्रम में केंद्र में चले प्रशिक्षण के दौरान कृषकों और गांव में आयोजित केंद्र के कार्यक्रम में साफसफ्फाई के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इस दौरान केंद्र द्वारा सफाई कर्मियों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र के प्रमुख डॉ एके पांडेय सहित प्रमुख रूप से डॉ.राजेश सिंह, डॉ.केसी सिंह, डॉ.स्मिता सिंह, संदीप शर्मा, डॉ. संजय सिंह, डॉ. केएस बघेल के साथ-साथ केंद्र के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

स्वच्छ भारत मिशन- स्वच्छता संवाद का आयोजन

सागर। जागत गांव हमार

गत दिवस जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर के सभागार में स्वच्छ भारत मिशन अन्तर्गत स्वच्छता संवाद का आयोजन केन्द्र की मृदा वैज्ञानिक डॉ. वैषाली शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा की बी.एससी कृषि अंतिम वर्ष की छात्राओं ने स्वच्छ भारत मिशन अन्तर्गत स्वच्छता ही सेवा विषय पर संवाद किया। उक्त कार्यक्रम में छात्रा कु. महक कुशवाह एवं कु. प्रियंका रघुवंशी ने स्वच्छ भारत मिशन में स्वभाव स्वच्छता एवं संस्कार स्वच्छता पर विस्तृत संवाद किया। कु. प्रियंका रघुवंशी ने बताया कि स्वच्छता कार्यक्रम सिर्फ स्वच्छता पखवाड़ा एवं स्वच्छता माह के अन्तर्गत करने से स्वच्छ नहीं होगा बल्कि इसे वर्ष पर्यन्त सामुदायिक सहयोग द्वारा चलाते रहना चाहिए ताकि हमेशा स्वच्छता बरकरार

रखी जा सके। कु. शिवी भार्गव ने कहा कि हमें निरन्तर सामुदायिक प्रयासों से प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक एवं पर्यटक स्थलों पर साफ-सफाई का विषेष ध्यान रखते हुए हमें कम से कम कचरा उत्पादित करना चाहिए एवं कचरे को कूड़ेदान में फेंकना चाहिए। साथ ही यथा संभव कचरे को पुन: उपयोग नहीं करना चाहिए। कु. चारू मालवीय ने बताया कि कचरे को रिसाइकिल कर धन अर्जन किया जा सकता है। कृषि में फसल अवषेषों, खरपतवारों एवं सह उत्पादों का सदुपयोग कर खाद बनाकर खेतों में प्रयोग करने से मृदा उर्वरता में वृद्धि होती है। मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है। इस कार्यक्रम में कुल 13 छात्राओं ने अपनी सहभागिता दी। कार्यक्रम के समापन अवसर पर केन्द्र के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. केएस यादव ने सभी छात्राओं के प्रयासों की सराहना करते हुए प्रमाण पत्र प्रदान किए।

सर्दी के दौरान बकरियों में दो खास बीमारी सबसे अधिक होती है...

ठंड के मौसम में बकरियों में होने वाली खतरनाक बीमारियां, उपचार विधि

भोपाल। जागत गांव हमार

गर्मियों के महीने लगभग खत्म हो गए हैं और सर्दी के दिन शुरू होने वाले हैं। ऐसे में किसानों के साथ-साथ पशुपालकों को भी कई बातों का ध्यान रखना जरूरी है। ताकि वह अपने पशुओं को सर्दी के दौरान होने वाले खतरनाक बीमारियों से बचा सकें। बकरियों में सर्दी के समय दो खतरनाक वायरस तेजी से फैलते हैं, जो जानलेवा होते हैं।

जैसा कि आप जानते हैं कि सर्दियों के दिन शुरू होने वाले हैं। ऐसे में पशुओं को कई तरह की बीमारियां होने का खतरा पशुपालकों को लगा रहता है। देखा जाए तो सर्दी के मौसम में बकरियों में खास तौर पर बीमारियों का अटैक होता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, सर्दी के दौरान बकरियों में दो खास बीमारी सबसे अधिक होती है। ये बीमारी जानलेवा भी हो सकती है। अगर पशुपालक समय रहते इन बीमारियों पर काबू नहीं पा पाते हैं।

सर्दी के मौसम बकरियों में होने वाली बीमारी

प्लेग रोग - सर्दी के मौसम में बकरियों में मुख्य रूप से प्लेग नाम की बीमारी बहुत ही तेजी से फैलती है। प्लेग रोग को पीपीआर भी कहा जाता है। यह बीमारी बकरियों में बहुत ही तेजी से फैलती है। अगर यह बीमारी एक भी बकरी को हो जाती है, तो फिर धीरे-धीरे यह अन्य बकरियों में भी तेजी से फैल जाती है।

चेचक रोग- इस बीमारी के बारे में ज्यादातर लोग पहले से ही जानते हैं कि यह कितनी घातक है। अगर बकरी में एक बार यह बीमारी हो जाती है, तो अन्य बकरियों में बहुत जल्दी फैल जाती है। इस रोग के चलते बकरियों के शरीर चकत्ते से बन जाते हैं। चेचक वायरस के संपर्क में आने से पशुपालकों को तुरंत इसके उपचार पर काम करना शुरू कर देना चाहिए। पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

उपचार विधि

- बकरियों में दोनों रोग होने के बाद उन्हें चरने के लिए बाहर न भेजें।
- समय-समय पर बकरियों का टीकाकरण करवाएं। ये टिके आप बकरियों को सरकारी पशु चिकित्सा केंद्रों से फ्री में लगवा सकते हैं।
- बकरियों में ये रोग होने के बाद उन्हें अन्य बकरियों या झुंड से अलग रखें।
- रोग से पीड़ित बकरियों के लिए खास तरह की शेड का इंतजाम करें। ताकि यह वायरस न फैल सके।

गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक करेंगे काम

अब सूअरों में भ्रूण मृत्यु और बांझपन का मिलेगा सटीक इलाज, एडवांस डिवाइस बनाएंगे वैज्ञानिक

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

सूअर पालकों के लिए अच्छी खबर है कि भ्रूण मृत्यु और बांझपन की समस्या दूर करने के लिए वैज्ञानिक एडवांस डिवाइस बनाएंगे। दरअसल, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय लुधियाना के प्रोजेक्ट को मंजूरी मिल गई है। विश्वविद्यालय के प्रोजेक्ट को भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने स्वीकृत करते हुए इस पर खर्च होने वाली रकम को भी मंजूरी दी है। ऐसे में सूअरों में पनपने वाली बीमारियों की रोकथाम का सटीक तरीका जल्द मिलने की उम्मीद बढ़ गई है। पंजाब के लुधियाना में स्थित गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के माइक्रो बायोलॉजी विभाग के वैज्ञानिकों के सुअर रोगों के लिए एडवांस डाइग्नोस्टिक टूल विकसित करने के प्रोजेक्ट को मंजूरी मिल गई है। इसके लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) की ओर से एडवांस निदान उपकरण विकसित करने के लिए 29 लाख रुपए भी मिल गए हैं, जो इस पर खर्च होंगे।

भारत सरकार ने प्रोजेक्ट के लिए 29 लाख दिए

गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अनुसार पशु चिकित्सा माइक्रोबायोलॉजी विभाग के लिए 29 लाख की रकम साथ पोर्सिन पार्वो वायरस को अलग करने और उनके पैदा होने का विश्लेषण करने के लिए कम्प्यूटेशनल विधियों के जरिए निदान उपकरण (टेट्रा एआरएमएस पीसीआर) बनाने के लिए स्वीकृति मिली है। इसके जरिए वैज्ञानिक सूअरों में फैलने वाली कई तरह की बीमारियों की रोकथाम का तरीका खोजेंगे।

आर्थिक नुकसान से बच सकेंगे पशुपालक

गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जेपीएस गिल ने सूअर उद्योग के महत्व और इसे प्रभावित करने वाली बीमारियों पर जोर देते हुए कहा कि सरकार से प्रोजेक्ट को मंजूरी मिलने से पशुपालकों का नुकसान घटाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य पंजाब में सूअरों की आबादी को प्रभावित करने वाले एक गंभीर वायरस को ट्रैक करना और उसकी रोकथाम का एडवांस तरीका खोजना है।

भ्रूण मृत्यु और बांझपन से छुटकारा मिलेगा

प्रधान अन्वेषक डॉ. गुरप्रीत कौर ने बताया कि सूअरों में फैलने वाली वायरल बीमारियां उनकी प्रजनन प्रणाली को सबसे ज्यादा प्रभावित करती हैं। इसके चलते सूअरों में भ्रूण मृत्यु और बांझपन की समस्या ज्यादा देखने को मिलती है। इस वजह से किसानों को काफी आर्थिक नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि हमारी रिसर्च टीम इन बीमारियों का शीघ्र और तेज निदान करने के लिए एक नया नैदानिक परीक्षण विकसित करेगा।

सूअरों में वायरस फैलने का पता लगेगा

उन्होंने बताया कि प्रोजेक्ट के जरिए एडवांस डाइग्नोस्टिक डिवाइस सूअरों की आबादी में वायरस के उभरने की जांच करेगी और पता लगाएगी कि इसके प्रसार को कैसे नियंत्रित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि रिसर्च टीम इसके लिए तैयारियों में जुटी है और अब प्रोजेक्ट के लिए खर्च होने वाली रकम भी मिल गई है तो इस काम तेजी आएगी। उम्मीद जताई गई है कि जल्द ही रोकथाम का तरीका खोज लिया जाएगा।

वैज्ञानिक ने बनाई कमाल की मशीन

गाय-भैंस खरीदने में अब नहीं चलेगी धोखाधड़ी

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

गाय-भैंस की खरीद-फरोख्त के दौरान धोखाधड़ी बहुत होती है। पशुओं के इस धंधे में धोखाधड़ी को रोकने के लिए ही गुरु अंगद देव वेटरनरी और एनिमल साइंस यूनिवर्सिटी (गडवासु), लुधियाना के साइंटिस्ट ने एक मशीन बनाई है। ये मशीन पशुओं की खरीद-फरोख्त में होने वाली धोखाधड़ी को रोकेगी। गडवासु में एनिमल बायोटेक्नोलॉजी विभाग के साइंटिस्ट डॉ. नीरज कश्यप ने बताया कि इस खास मशीन को बनाने के लिए एक वजन तोलने वाली इलेक्ट्रोनिक मशीन ली गई है। इसके साथ कुछ और उपकरण भी जोड़े गए हैं।

ये सब आपस में एआई और आईओटी से जुड़े हैं। अब सुबह या शाम को जब पशुपालक हाथ से गाय-भैंस का दूध निकालता है तो दूध वाले बर्तन को वजन तोलने वाली मशीन पर रख देता है। फिर बर्तन समेत ये मशीन पशु के नीचे रख दी जाती है। हाथ से निकाला जा रहा दूध बतर्न में जमा होता रहता है।

दूध निकालने में छेड़छाड़ की तो पकड़े जाएंगे

डॉ. नीरज कश्यप ने बताया कि गाय-भैंस के चार थन होते हैं। दूध निकालते वक्त मशीन चार थन की गिनती अपनी मैमोरी में रखती है। साथ ही हर एक थन से निकलने वाली दूध की धार की स्पीड और उसकी मोटाई अलग-अलग होती है। अब चार के अलावा पांचवी धार को मशीन पकड़ लेगी। साथ ही लोटे और मग से मिलाए गए पानी या दूध को भी मशीन पकड़ लेगी। इसके बाद मशीन की मदद से क्लाउड पर ऐरर शो होने लगेगा।

गाय-भैंस का डोप टेस्ट भी करता है गडवासु

गाय-भैंस से ज्यादा दूध लेने के लिए कुछ पशुपालक एक ऐसा टीका देते हैं जो सिंथेटिक ग्रोथ हॉर्मोन का होता है। इससे होता ये है कि जो गाय-भैंस 20 लीटर दूध दे रहा है वो इस टीके के बाद 30 से 35 लीटर तक दूध देने लगती है। इसी की जांच करने के लिए गडवासु के बॉयो टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट ने इसकी जांच का तरीका खोजा है। इसे डोप टेस्ट भी कहा जाता है। इस टेस्ट के तहत पशु के मिल्क और ब्लड का सैम्पल लिया जाता है। इसकी जांच करने से पता चल जाता है कि पशु को कोई खास टीका दिया गया है या नहीं। इस टेस्ट से गाय-भैंस की बीमारियों का पता भी चल जाता है।

इस एप पर मिलेगी रंगीन और सजावटी मछली पालन की सभी जानकारी

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

देश में मछली पालन को बढ़ावा देने और किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा नई तकनीकों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस क्रम में मछली पालन विभाग ने किसानों और घरों में सजावटी एवं रंगीन मछलियों के पालन करने वालों के लिए सभी जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से रंगीन मछली मोबाइल एप की शुरुआत की है। इस एप पर एक्वेरियम का शौक रखने वाले दुकान मालिकों और मत्स्य पालकों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी और महत्वपूर्ण संसाधन उपलब्ध कराये जाएँगे। इस एप को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के सहयोग से आईसीएआर-सीआईएफए (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान) ने विकसित किया है।

रंगीन मछली एप की विशेषताएं- इस एप पर 8 भाषाओं में रंगीन और सजावटी मछली प्रजातियों के बारे में

विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई गई है। चाहे शौकिया लोग मछली की देखभाल के बारे में मार्गदर्शन चाहते हों या किसान अपनी नस्लों में विविधता लाना चाहते हों, यह एप देखभाल, ब्रीडिंग और रखरखाव के बारे में सभी जानकारी उपलब्ध कराती है। एप की एक खास विशेषता फाइंड एक्वेरियम शॉप्स ऑप्शन है, जिस पर उपयोगकर्ता अपने आस-पास के एक्वेरियम स्टोर के बारे में जान सकते हैं।

एप में सजावटी मछली उद्योग में नए लोगों और पेशेवरों दोनों के लिए एजुकेशन मॉड्यूल शामिल हैं। एक्वेरियम केयर की मूल बातें मॉड्यूल में एक्वेरियम के प्रकार, मछलियाँ, जल निस्पंदन, प्रकाश व्यवस्था, भोजन, दिन-प्रतिदिन के रखरखाव जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया गया है, जबकि सजावटी जलीय कृषि मॉड्यूल विभिन्न सजावटी मछलियों की ब्रीडिंग, पालन के बारे में बताया गया है।

इस तरह करें मछली एप का उपयोग

- सबसे पहले https://play.google.com /store/apps/details?id=com.ornamentalfish लिंक पर जाकर एप डाउनलोड करें।
- अपना व्यक्ति गत विवरण जैसे ईमेल आईडी, मोबाइल नंबर और पता भरकर नया खाता बनाएँ। लॉग इन के लिए अपना पासवर्ड भी बनाएं। फिर अपनी पसंद की भाषा चुनें। अब आप अपनी चुनी गई भाषा में सभी जानकारी देख सकते हैं।

सजावटी मछली पालन के लिए सरकार की योजनाएं

- घर पर सजावटी मछली पालन इकाई (समुद्री और मीठे पानी दोनों, इकाई लागत 3.0 लाख रुपए)।
- मध्यम स्तर की सजावटी मछली पालन इकाई (समुद्री और मीठे पानी की मछली, जिसकी इकाई लागत 8.0 लाख रुपए है)
- एकीकृत सजावटी मछली इकाई (मीठे पानी की मछलियों की ब्रीडिंग और पालन) जिसकी इकाई लागत 25.0 लाख रुपए है।
- एकीकृत सजावटी मछली इकाई (समुद्री मछली की ब्रीडिंग और पालन) जिसकी इकाई लागत 30.0 लाख रुपए है।

सजावटी मछलियों की किस्में

भारत में सजावटी मछलियों की समृद्ध विविधता है, जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र और पश्चिमी घाटों से 195 से अधिक देशी किस्में और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्रों से लगभग 400 प्रजातियां शामिल हैं। भारत से निर्यात की जाने वाली अधिकांश सजावटी मछलियां जंगली किस्में हैं, जिन्हें मुख्य रूप से पूर्वोत्तर और दक्षिणी राज्यों की नदियों से एकत्र किया जाता है, जो देश के कुल सजावटी मछली निर्यात का लगभग 85प्रतिशत योगदान देती हैं। पूर्वोत्तर से रिपोर्ट की गई 195 प्रजातियों में से 155 सजावटी मूल्य की हैं।

मप्र को मिलेगी नई पहचान, दस सालों में 12,706 करोड़ रुपए का निर्यात

गैर-बासमती चावल पर रोक हटाने से प्रदेश के किसानों की बढ़ेगी आय

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्र के गैर-बासमती चावल के निर्यात पर से प्रतिबंध हटाने का निर्णय देश के चावल उत्पादकों को राहत देने वाला साबित होगा। मप्र के चावल उत्पादक किसानों को लाभ होगा। पिछले 10 सालों में 2015 से वर्ष 2024 तक 12,706 करोड़ का चावल निर्यात हुआ है। सबसे ज्यादा 3634 करोड़ का चावल निर्यात इसी साल हुआ है। केंद्र सरकार के अंतर्गत विदेश व्यापार महानिदेशालय की जारी अधिसूचना के अनुसार गैर-बासमती सफेद चावल के निर्यात के लिए 490 डॉलर प्रति टन का न्यूनतम निर्यात मूल्य निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पारबॉइल्ड और ब्राउन चावल पर निर्यात शुल्क को 20 फीसदी से घटाकर 10 फीसदी कर दिया गया। इससे किसानों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में और ज्यादा लाभ मिल सकेगा। मुख्यमंत्री ने इस फैसले की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में कृषि निर्यात में सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय है, जो देश और मप्र के किसानों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान स्थापित करने में मदद करेगा।

मुख्यमंत्री यादव ने फैसले को बताया ऐतिहासिक

वर्ष	निर्यात-
2015	421
2016	471
2017	477
2018	1007
2019	1058
2020	1035
2021	2018
2022	1665
2023	2920
2024	3634
	(करोड़ में)

सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस फैसले की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में कृषि निर्यात में सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय है, जो देश और मध्यप्रदेश के किसानों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान स्थापित करने में मदद करेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में चिन्नौर की लोकप्रियता

केन्द्र सरकार के इस फैसले का लाभ मध्यप्रदेश के चावल उत्पादक क्षेत्रों के किसानों को होगा। राज्य के प्रमुख चावल उत्पादन क्षेत्रों में जबलपुर, मंडला, बालाघाट और सिवनी शामिल हैं। ये अपनी उच्च गुणवत्ता वाले जैविक और सुगंधित चावल के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें मंडला और डिंडोरी के जनजातीय क्षेत्रों का सुगंधित चावल और बालाघाट के चिन्नौर चावल को जीआई टैग प्राप्त है। इस पहचान के कारण यहां के चावल को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में लोकप्रियता मिली है।

दुनिया के कई देशों में जाता है मप्र का चावल

मध्यप्रदेश से चावल के प्रमुख निर्यात बाजारों में चीन, अमेरिका, यूएई और यूरोप के कई देश शामिल हैं। इस निर्णय से न केवल राज्य के चावल उत्पादकों की आय में वृद्धि होगी बल्कि जनजातीय क्षेत्रों के उत्पादों को भी वैश्विक पहचान मिलेगी।

बढ़ रहा प्रदेश का चावल उद्योग

मध्यप्रदेश के चावल उद्योग ने पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक वृद्धि देखी है। इन सालों में 200 से अधिक नई चावल मिलों की स्थापना हुई है। इस फैसले से प्रदेश के किसानों और नियाज़्तकों को अच्छा लाभ मिलने की संभावना है। अब वे अपने चावल को न्यूनतम निर्यात मूल्य से अधिक दरों पर अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बेच सकेंगे।

अटेर का किला, नरेश्वर व मितावली का होगा विकास

चंबल के ग्रामीण क्षेत्रों के पर्यटन स्थलों को संवारेगा पर्यटन निगम, बढ़ेगी आय

37 करोड़ से संवारे जाएंगे चंबल के पर्यटन स्थल, रोड बनेगी व फूड कियोस्क

ग्वालियर। जागत गांव हमार

मप्र राज्य पर्यटन निगम और ग्वालियर स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन अब चंबल के ग्रामीण क्षेत्रों के पर्यटन स्थलों को संवारेगा। इन स्थानों पर ज्यादा से ज्यादा पर्यटक आएं इसलिए सुविधाओं को बढ़ाया जाएगा। इसके लिए प्लानिंग तैयार की गई है। इसमें ग्वालियर-चंबल संभाग के तीन पर्यटन स्थल को शामिल किया गया है। इनमें मुरैना जिले के पढ़ावली, मितावली, बटेश्वर, अटेर का किला और नरेश्वर में पर्यटकों की सुविधा के लिए काम होना है। वहीं फूलबाग जोन में भी पर्यटन सुविधा के लिए 17 करोड़ खर्च होंगे। इसमें नगर निगम के मोतीमहल संग्रहालय पर 10 करोड़ की राशि खर्च कर संवारी जाएगी। वहीं ग्वालियर अंचल के पर्यटन स्थलों पर लगभग 10.44 करोड़ रुपए की राशि खर्च होगी।

मितावली| मुरैना में सबसे ज्यादा ऐतिहासिक धरोहर स्थल में यह शामिल है। मितावली में 2.19 करोड़ की राशि से पर्यटक सुविधा देने के लिए काम किए जाएंगे। इसमें पर्यटक इस स्थल पर पसंदीदा व्यंजन खा सके इसलिए फूड कियोस्क की सुविधा भी मिलेगी।

अटेर का किला| भिंड का अटेर का किला काफी पुराना है। इस किले पर मप्र राज्य पर्यटन निगम ने 2.10 करोड़ की राशि खर्च करेगा। यहां पर्यटकों की सुविधा के लिए टायलेट, फूड कियोस्क, पार्किंग आदि बनेगी।

नरेश्वर| मुरैना जिले के नरेश्वर के लिए 2.69 करोड़ रुपए और ककनमठ के लिए 2.26 करोड़ रुपए की राशि खर्च की जाएगी। यहां पर सड़क निर्माण के साथ-साथ टायलेट, फूड कियोस्क, पार्किंग, गार्ड रूम, सूचना केंद्र, लैंड स्केपिंग, वाटर सिस्टम, गजिबो, बैंच, पाथ-वे और आडियो गाइड सिस्टम लगाया जाएगा।

तकनीक सौंपी, हल्दी से करक्यूमिन कैप्सूल और फूलों से बनेगा भभूत

लखनऊ। जागत गांव हमार

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) ने दो हर्बल प्रौद्योगिकियो को निजी कंपनियों को सौंपा है। एक तकनीक मंदिर में भगवान के चढ़े हुए फूलों 'शिवा भभूत' बनाने और दूसरी तकनीक हल्दी से 'करक्यूमिन कैप्सूल' बनाने की है। करक्यूमिना को हल्दी से निकालने की तकनीक दक्षिण भारत की कंपनी और फूलों से भभूत बनाने की तकनीक दिल्ली की निजी कंपनी को सौंपी गई है। इसके पहले यह तकनीक वाराणसी की एक कंपनी को दी जा चुकी है। एनबीआरआई के निदेशक डॉ. अजित कुमार शासनी ने बताया कि शिव भभूत भगवान को चढ़ाए गए फूलों से तैयार किया जाता है। संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से कुटीर उद्योग किया जा सकता है।

नीबू, लौंग और पान के फ्लेवर में तुलसी का पौधा उगेगा

सीएसआईआर-सीमैप ने तुलसी के दस नए फ्लेवर वाले पौधे तैयार किए है। इसमें 'सिम सुवास तुलसी' पान के स्वाद की है। इसके साथ ही लौंग के स्वाद की राम तुलसी, नीबू की सुगंध की सिम ज्योति, सिम सौम्या, सिम आयु, सिम कंचन, सिम स्निग्धा, सिम सुखदा, सिम शिशिर नाम से तुलसी की किस्म के पौधे उगाए जा सकते हैं।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते है कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादकः अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)